अमेरिका-चीन शिखर बैठक, भारत के लिए सबक

सन फ्रांसिस्को में अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच इस सप्ताह हुई शिखर बैठक से दुनिया की दो सबसे बड़ी शक्तियों के बीच रिश्तों को प्रभावित करने वाले किसी भी बड़े मतभेद के सुलझने की संभावना नहीं है। लेकिन, इस बैठक ने हाल ही में जबरदस्त गिरावट से रूबरू और बढ़ती चिंता का सबब बनी इस रिश्ते में स्थिरता लाकर दुनिया के लिए बहुत जरुरी राहत का वादा किया है। एपेक की बैठक के मौके पर हुई इस शिखर बैठक के दो महत्वपूर्ण नतीजे निकले। पहले नतीजे के रूप में कई ठोस समझौते सामने आए, जिनमें सैन्य स्तर की सीधी बातचीत को फिर से शुरू करना और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस) से जुड़े जोखिम और सुरक्षा के मुद्दों पर चर्चा करना शामिल है। दूसरा नतीजा वह है जिसे दोनों पक्षों ने रिश्ते की मीनार में एक मंजिल जोड़ने के रूप में वर्णित किया है। यही वो लक्ष्य था, जब दोनों नेता आखिरी बार 2022 में बाली में मिले थे। हालांकि, बाली में हुई सहमति "जासूसी गुब्बारे" की घटना से गुम हो गई। इस बार सतर्क आशावाद यह है कि रिश्तों में स्थिरीकरण का यह प्रयास कहीं ज्यादा ठोस आधार पर किया गया है। लेकिन यह कब तक चलेगा यह एक खुला प्रश्न बना हुआ है, खासकर तब जब खलल पैदा करने वाली दो संभावित राजनीतिक घटनाएं सामने आने वाली हों। अगले साल जनवरी में ताइवान में चुनाव होंगे तथा इसके नतीजों के बाद इस पूरे जलडमरूमध्य में तनाव और बढ़ सकता है। ताइवान के मसले पर, दोनों पक्षों ने अपना रुख दोहराया। चीन ने जहां हस्तक्षेप के खिलाफ चेताया, वहीं अमेरिका ने कहा कि वह यथास्थिति में किसी भी बदलाव का विरोध करता है। इस बीच, अमेरिका नवंबर 2024 में होने वाले चुनावों से पहले अगले साल चुनावी रंग में सराबोर हो जाएगा और चुनाव प्रचार के दौरान अनिवार्य रूप से चीन को लेकर तीखी बयानबाजियां देखने को मिलेंगी।

एक दीर्घकालिक चिंता – और जो इस मामूली स्थिरीकरण की सीमाओं को रेखांकित करती है – मतभेद का वह एक बुनियादी बिंदु है कि दोनों देश अपने रिश्तों के भविष्य को कैसे देखते हैं। जैसा कि श्री शी ने कहा, "सबसे पहला सवाल" यह है कि क्या दोनों देश "प्रतिद्वंद्वी" हैं या "साझीदार"। उन्होंने अमेरिका द्वारा रिश्तों को मौलिक रूप से प्रतिस्पर्धी बताए जाने की आलोचना करते हुए कहा कि इससे "गलत जानकारी पर आधारित नीति निर्माण, गुमराह करने वाली कार्रवाइयां और अवांछित नतीजों" को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने अमेरिका से ताइवान और निर्यात नियंत्रण सहित विभिन्न मुद्दों पर "उलट-पलट करने, ... और सीमाओं को लांघने से बचने" को कहा। हालांकि, बाइडेन ने "अमेरिका और चीन के प्रतिस्पर्धी होने की बात पर जोर दिया"

अमेरिका और चीन के बीच अब तक कैसे रहे राजनयिक संबंध?

- 1979 में अमेरिका और चीन के बीच राजनयिक संबंध स्थापित हुए।
- दोनों देश आर्थिक परस्पर निर्भरता बढ़ाने की राह पर चल पड़े।
- चीन को इस रिश्ते से काफी फायदा हुआ और उसकी आर्थिक और सैन्य शक्ति बढ़ी, जिससे अमेरिका की प्रधानता को चुनौती मिल सके
- ट्रम्प युग – ट्रम्प प्रशासन ने चीन के पक्ष में विशाल द्विपक्षीय व्यापार असंतुलन पर हमला करने का एक मुद्दा बनाया।
- अमेरिका-चीन के बीच श्व्यापार युद्धश शुरू हो गया और अमेरिका ने शडिकॉउलिंगश नीति का पालन करना शुरू कर दिया।
- बिडेन युग – समय के साथ, बिडेन प्रशासन ने ट्रम्प से विरासत में मिली चीन नीति में अपनी विशेषताएं जोड़ीं और इसे शडी-रिस्किंगश में बदल दिया।

और इस प्रतिस्पर्धा को "जिम्मेदारी के साथ प्रबंधित किए जाने" की तत्क. ालिक चुनौती का जिक्र किया। इन मतभेदों को छोड़कर, दोनों देशों के बीच सहमति का एक महत्वपूर्ण बिंदु यह स्पष्ट अहसास है कि प्रतिस्पध र्ा को संघर्ष में बदलने से रोकने के लिए उच्च-स्तरीय जुड़ाव और संवाद के चौनलों को खुला रखना अहम है। यह भारत और चीन के बीच के रिश्तों के लिए स्पष्ट सबक प्रदान करता है, क्योंकि वास्तविक नियंत्रण रेखा पर चल रहा संकट चौथी बार सर्दियों के मौसम से रूबरू होने वाला है। बातचीत अपने आप में कोई रियायत नहीं है, और जैसा कि अमेरिका और चीन ने महसूस किया है, जब प्रमुख शक्तियों के बीच रिश्तों में गिरावट का खतरा हो, तो रिश्तों की मीनार में एक मंजिल जोड़ना पहला कदम होता है।

हाल ही में अमेरिका-चीन शिखर सम्मेलन किस बारे में था?

- यह एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (एपीईसी) शिखर सम्मेलन के मौके पर हुआ।
- मुख्य चर्चा विषयों में शामिल हैं -
  - a) कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का विनियमन और क्षेत्रीय सुरक्षा मुद्दे
  - b) अमेरिका और चीन के बीच उच्च-स्तरीय राजनीतिक और सैन्य संचार चौनलों को नवीनीकृत करने पर सहमति हुई
  - c) शिखर सम्मेलन अमेरिका के प्रबंधन पर केंद्रित था -रणनीतिक साझेदारी बनाने के बजाय चीन से प्रतिस्पर्धा
  - d) चर्चा में मध्य पूर्व के संकट और यूक्रेन युद्ध पर भी चर्चा हुई।

प्रारंभिक परीक्षा संभावित प्रश्न (Prelims Expected Question)

प्रश्न : अमेरिका-चीन के मध्य विवाद के मुख्य मुद्दे क्या है/ हैं?

1. ताइवान का मुद्दा
2. दक्षिणी चीन सागर में चीन का आक्रामक रुख
3. हांगकांग की स्वतंत्रता का मुद्दा

कूट:

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

Que. What are the main issues of dispute between America and China?

1. Taiwan issue
2. China's aggressive stance in the South China Sea
3. Issue of Hong Kong independence

Code:

(a) Only 1 and 2
(b) Only 2 and 3
(c) Only 1 and 3
(d) 1, 2 and 3

उत्तर : A

संभावित प्रश्न व प्रारूप (Expected Question & Format)

प्रश्न: हाल ही में हुए अमेरिका-चीन शिखर सम्मेलन का भारत पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर का दृष्टिकोण :

- उत्तर के पहले भाग में अमेरिका-चीन शिखर सम्मेलन की तथ्यात्मक चर्चा करें।
- दूसरे भाग में इस शिखर सम्मेलन के भारत पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा करें।
- अंत में आगे की राह बताते हुए निष्कर्ष दें।

नोट : अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। अत: इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।